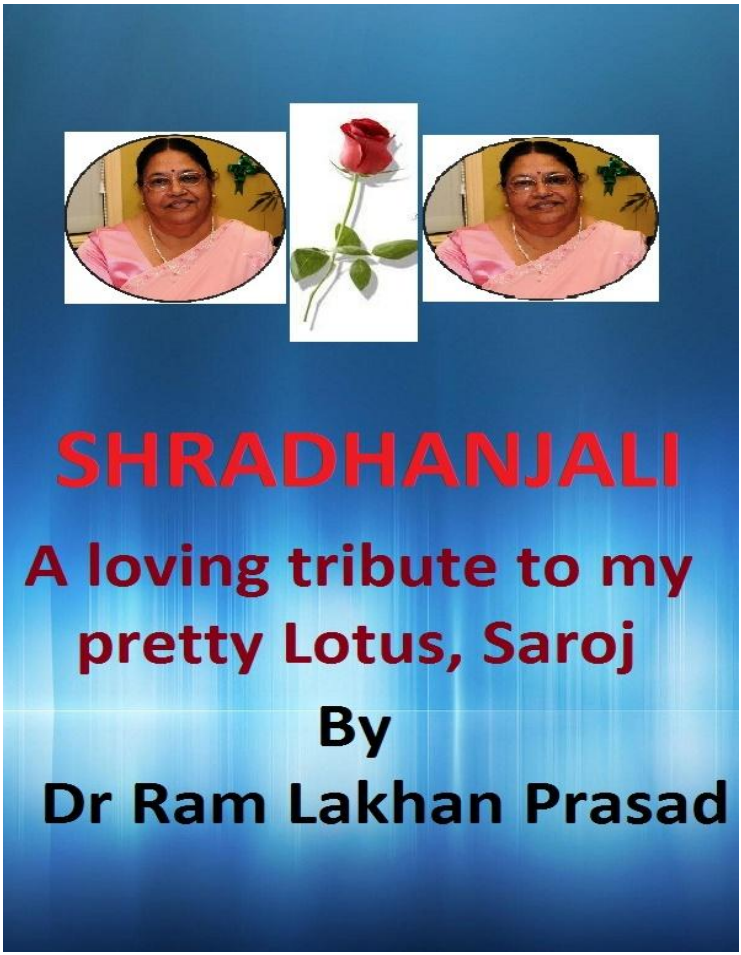

SHRADHANJALI IS A

PRESENTATION IN HINDI

SHRADHANJALI

Treasured Fond Memories of Saroj

1940 - 2013

Created By
Dr Ram Lakhan Prasad

श्रद्धांजलि

'Shradhanjali'

"Jeewan ke safar mein
raahi milte hain bichhad
jaane ko Aur de jaaten hain
yaaden tanhaai mein
tadpaane ko"

Treasured Memories of Saroj

By

Dr Ram Lakhan Prasad

©

श्रद्धांजलि

Shradhanjali

जीवन के सफर में

राही

मिलते हैं बिछड़ जाने को

Dr Ram Lakhan Prasad

SLP PUBLICATION

2015

मेरे आत्मा की पुकार

‘चल अकेला चल ’

राम लखन प्रसाद की रचनाऐं
उनके सरोज के लिए श्रद्धांजलि

हमारी
हिंदी
रचनाएँ

सरोज के प्रति
लखन की भेंट

चल अकेला चल

मेरी श्रद्धांजलि मेरे सरोज देवी के लिए

हम न कुछ हंस के सीखे हैं
ना कुछ रो के सीखे हैं
जो कुछ भी थोड़ा सा सीखे हैं
बस सरोज के हो के सीखे हैं |

भूमिका

सरोज और हमारा साथ चौकी और बेलने या यूँ जानिए की रोटी और तावा सी जैसी रही है | मर्दों के दोस्ती में कृष्ण और सुदामा का प्रथोक दिया गया है पर नारी समाज में वैसी दोस्ती या मित्रता का नमूना दो नारियों के बीच का मिलना लगभग असंभव है | इस लिए सरोज और मैं एक अपने ही तरह के सखी या सहेली थी जिन का मिलान या तुलना नहीं किया जा सकता |

इस सम्बन्ध का बस एक ही कारण है और वो है सरोज का महान, सुशील और उत्तम शिष्टाचार जिस पर हम ने अपने जीवन में आज तक किसी को उन के विपरीत कथन करने की साहस ही नहीं देखी और न ही सुनी है |

सरोज मेरे सभी दोस्तों में से एक वैसी साथी या सहेली थी जिन पर केवल मैं ही नहीं पर हमारा सारा युवती समाज नाज़ करता था | सरोज हमारे स्कूल के अध्यापकों और अध्यापिकाओं के लिए हर वक़्त एक नमूना बन कर पेश आती थीं |

ठीक यही वो भी कारण है जिस को ले कर सरोज के पतिदेव श्री राम लखन प्रसाद जी ने सरोज के निधन के बाद उन के प्रति श्रद्धांजलि पेश करते हुए इस ग्रन्थ को रचा है | सरोज जैसी विद्यार्थी, मित्र, सखी या सहेली, पत्नी, माता, आजी, नानी, अध्यापिका और व्यक्ति का प्रतिरूप मिलना कठिन ही नहीं शायद नामुमकिन भी है |

इस सुन्दर, भावनापूर्ण और अति दारुण रचना को श्री राम लखन प्रसाद जी ने कैसे रचा होगा इस का अनुमान लगाना एक साधारण व्यक्ति के लिए बहुत मुश्किल है पर इन कविताओं और शायरियों को पढ़

लेने के बाद हम को यह एह्साह हो जाता है की वे अपने सरोज को कितना चाहते थे और बेपनाह प्यार करते थे | पचपन वर्षों की घनिष्ट सम्बन्ध जब टूटा होगा तो उनके दिल और दिमाग पर क्या बीता होगा इस का सही पता शायद कभी किसी को नहीं लग सके पर इन रचनाओं को पढ़ लेने के बाद हम थोड़ा सा अनुमान तो लगा ही सकते हैं |

मेरे लिए इन भावपूर्ण रचनाओं को पढ़ना जहाँ बहुत कठिन और ह्रदय विदारक था वहीँ हम ने डाक्टर साहब की सभी आंतरिक वेदनाओं को मापने की कोशिश की पर उनका गहरा दर्द जो इन रचनाओं में छुपा है मैं भी पुरे तौर से समझ नहीं पायी | लेकिन वे हम सब के बधाई के पात्र हैं |

एसे प्रेम के प्रदर्शन हम ने प्रेम कहानियों में ही पढ़े और सुने थे लेकिन लखन और सरोज के प्रेम कहानी किसी हीर और

राँझा, लैला और मजनू या राधा और कृष्ण के प्रेम कहानी से कम नहीं है | मुझे तो हर एक पृष्ठ से यही चीख सुनाई देती है - "सरोज लखन का प्यार अमर है "|

ज्यादा न कहते हुए हम इस रचना के पढ़ने वालों को यह बता देना चाहती हूँ की इस सारे पुष्तक में भरी सभी प्यार की बाते हम सब को प्रभावित जरूर करेगी | सरोज और लखन का प्यार धन्य है और यह सदा अमर रहे | सरोज के आत्मा को मुक्ति मिले और राम लखन प्रसाद जी को शांति प्राप्त हो |

सरोज की शुभचिंतक
उमा

मेरे आत्मा की पुकार- श्रद्धांजलि

मेरे आत्मा की पुकार एक मेरे नए रचनाओं या कविताओं का संग्रह है जिसको हमने अपने स्वर्गीय पत्नी सरोज देवी के निधन के बाद लिखना शुरू किया था | पिछले तीन वर्षों में हमने न जाने कितने कविताओं को उनके लिए रचा है जिससे हमको शान्त्वना मिली और हमारे मन को शांति और सुकून प्राप्त हुआ | यही हमारे लिए एक एसा उपाय था जिससे मैं अपने तन्हाई में उनके साथ ही रहे और उनसे हमारा त|लूक वैसा ही बना रहे |

हम ने अपने इस उद्देश्य को पूरा करने में पुरे तौर से कामयाब हुए हैं और उस मंज़िल तक पहुँच गए हैं जहाँ मेरा और उनका सम्बन्ध अमर हो गया है | वो मर कर भी हमारे साथ हैं और यही एक कारन है की मैं आज भी जिन्दा हूँ वरना उनके वियोग में मैं कब का गुज़र गया होता |

मेरे इस विचार का नमूना इन रचनाओं को पढ़ने वालों को इन तमाम कविताओं में मिलेगा जिनको हम ने बड़े लगन और चाहत से रचा है | मेरे हर एक शब्द में गहराई तो है ही लेकिन उन सब में हम दोनों का अटूट प्यार कूट कूट कर भरा गया है |

अगर उनका निधन नहीं हुआ होता तो शायद मैं अपने आंतरिक प्रेम को इस तरह दर्शा नहीं प|ता क्यूंकि वो मेरे पास ही रहतीं और इन सब भावना पूर्ण शब्दों की जरुरत ही नहीं पड़ती | हम तो परस्पर एक दूजे के लिए अपना प्यार निवछावर करते रहते |

लेकिन हमारा वियोग हम को कविता का सहारा लेने से मजबूर कर दिया है | अगले जनम में जब हम फिर मिलेंगे तो इस अधूरी प्रेम कहानी को पूरी करेंगे |तब तक के लिए मैं अपने एसे ही भाविक रचनाओं से अपने दिल और दिमाग की सभी मुरादों की पूर्ति करता रहूँगा |

मेरी भी जिंदगी बहुत लम्बी नहीं है लेकिन जब तक यह जीवन है मैं उनकी आराधना में बड़े प्रेम से बिता दूंगा | यही उनकी ख्वाहिश थी और मेरी भी यही तमन्ना है |

हम ने एक दूसरे से अटूट प्यार किया था । अपना पारिवारिक कर्तव्य निभाया था और समाज सेवा कर के अपने सभी मुरादों को पूरा किया था । हमारा कोई भी एसा इक्षा नहीं रह गया था जिसको हमने पूरा नहीं कर पाया था । हाँ अगर और दिन वो जीती रही तो मेरा भी उद्धार हो जाता ।

कृपया इन रचनाओं को पढ़िए और अगर इन में से कोई शिक्षा निकलती हो तो यह मेरा सौभाग्य होगा । याद रहे पवित्र प्यार कोई आसान मंज़िल नहीं है क्यों की उस के लिए लाखों कुर्बानी की आवश्यकता होती है । हम ने तो अपना प्यार को अमर कर दिया अब इस संसार के नए पीढ़ी के लोगों की बारी है ।

चलो हम इस दुनियां को अपने पवित्र प्यार से भर दें और सदा खुश रहें ।वैसे तो हम ने अपने जीवनकाल में परमात्मा के कृपा से अपनी सभी इक्षाओं की पूर्ति कर ली है और पुरे रूप से संतुष्ट हैं लेकिन सरोज के निधन के बाद हम को अब अपने बाकी जीवन में सिर्फ तीन काम करने हैं ।

पहला है अपने शेष जीवन को सरोज के प्यार में बिता देना है | जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक उनके ही गुण गाता रहूँगा और उनको ही अपने जिगर में बसाये रखूँगा | इस के लिए मैं उनके मनचाहे भजनों और ग़ज़लों को गाता और सुनता रहूँगा |

दूसरा मैं अपने जीवन काल में कोई भी एसा कार्य नहीं करूँगा जिससे मेरे प्राणप्रिये सरोज के आत्मा को कोई असमंजस या लक्लीफ पहुंचे क्यूंकि हमारे सारे जीवन को उन्हों ने ही सवांरा और सुध|रा था | उन की आराधना ही अब हमारी एक मात्र लक्ष बन जायेगी |

तीसरा है जिससे मैं इसी तरह के रचनाओं और चलचित्रों को लिख और रच कर उन के आत्मा को शांति प्रदान करता रहूँगा और उनके नाम को अमर करता रहूँगा जिससे मेरे जाने के बाद भी उनका सुबह गुण इस संसार के लोग गाते रहें | हमारे सरोज देवी के लिए मैं जितना भी कहूँगा, लिखूंगा या रचूंगा वो सब अपर्याप्त ही रहेगी क्यूंकि सरोज इन सब प्रसंशा, बड़ाई, और शबाशियों से कहीं और ऊंचीं और महान हैं |

सारे बन के बृक्षों को मैं अपना कलम बनाऊँ, समस्त संसार के जल को अपना दवात बनालूं और पुरे धरती आकाश को कागज़ करूं फिर भी मेरे सरोज का सही गुणगान मैं नहीं लिख पाउँगा | लेकिन उनकी पूरी जीवनी को सब के सामने रखना मेरी कोशिश जारी रहेगी जिससे उनको हम सभी लोग सदा इज़्ज़त से पहचानते रहे | मेरी सरोज पूजनीय थी और सदा रहेगी | उन का आराधना हम इस लिए करते हैं क्यूंकि उन के आंतरिक में जो ज्ञान भरे थे उनका कुछ अंश हम अपने दिनचर्य में ढाल सकें | |

राम लखन प्रसाद

धन्य है देवी सरोज

केवल क्षण भर ही मैं साथ रह पाया था तेरे
पास इस जीवन मे
तेरे कोयल जैसा कूक सिर्फ थोड़ी ही देर
तक सुन पाया था मैं
फिर न जाने किस ओर चली गयी तू कहाँ
उड़ गयी हो के मूक
मेरा तन मन फिर से सुनने को तरस रहा
है तेरा वही कोयल जैसा कूक
लम्बी जीवन में क्षण भर में भर दी थी तू ने
सुधा के निर्मल जल
वो क्षण जिसकी क्षणभंगुरता को लेकर
जीवन कर दी थी सब हल
एक अतुलित रत्न बन कर हम सब को
दुखड़ों से दूर किया था
बिना स्वार्थ के सब कुछ दे कर हम सब
को मुक्त कर दिया था
मेरे नीरव -निर्जन पथ को मधुर मंत्र दिया
जीवन सफल बनाया

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below